8. एक श्रेष्ठ साधक के लिए आवश्यक आचार विचार की विवेचना भगवती आराधना ग्रन्थ के आधार पर कीजिए।

9. प्राणियों के प्रति करुणा भाव की विवेचना दाशवैकालिक ग्रन्थ के आधार पर कीजिए।

खण्ड—स **2×20=40**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

10. भगवती आराधना ग्रन्थ के आधार पर साधक के लिए आवश्यक आचार विचार की विवेचना कीजिए।

11. दशवैकालिक ग्रन्थ के आधार पर प्राणियों के प्रति करुणा का भाव का वर्णन कीजिए।

12. मुक्तकाव्य के स्वरूप की दृष्टि से लज्जावग्ग का विवेचन कीजिए।

13. गऊडवहो एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक काव्य है इस पंक्ति के आलोक में गऊडवहो की समीक्षा कीजिए।

CPL–02

December – Examination 2023

Certificate in Prakrit Language

प्राकृत गद्य/पद्य

Paper : CPL-02

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **10×2=20**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1. (i) समणसुत्त में कुल कितने प्रकरण हैं ?

   (ii) आगम किसे कहते हैं ?

   (iii) अर्धमागधी प्राकृत के साहित्य को कितने भागों में विभक्त किया गया है ? नाम लिखिए।

(iv) लज्जावग्ग किनकी रचना है?

(v) मुनि कस्तुरीविजय कृत प्राकृत रचना का नामोल्लेख कीजिए।

(vi) गउडवहो किस शताब्दी का ग्रन्थ है ?

(vii) आराधक कौन हैं ?

(viii) बोधपाहुड में कितनी गाथाएं हैं ?

(ix) श्रीकस्तुरीविजय रचित कथा का नाम लिखिए।

(x) द्वादशांग किसे कहते हैं ?

खण्ड—ब **4×10=40**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

2. आचारांग सूत्र ग्रन्थ के अनुसार आत्मबोध का वर्णन कीजिए।

3. उत्तराध्ययन सूत्र में प्रतिपादित जीवनमूल्यों को स्पष्ट कीजिए।

4. अष्टपाहुड ग्रन्थ के आठ पाहुडों के वर्ण्य विषय पर प्रकाश डालिए।

5. अधोलिखित गाथाओं में से किसी एक गाथा की सप्रसंग एवं व्याकरणात्मक टिप्पणी सहित व्याख्या कीजिए :

कीरइ समुद्दतरणं पविसिज्जइ हुयवहम्मि पज्जलिए।
आयामिज्जइ मरणं नत्थि दुलंघं सिणेहस्स॥

अथवा

जह मारुओ पवड्ढइखणेण वित्थरइ अब्भयं च जहा।
जीवस्स तहा लोभी मंदो वि खणेण वित्थरइ॥

6. रोहिणीज्ञात एक विशुद्ध लौकिक कथा है इस तथ्य का वर्णन कीजिए।

7. निम्नलिखित में से किसी एक गद्य की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

तए णं रायगिहे नयरे बहुजणो अन्नमन्नं एवमाइक्खइ— 'धन्ने णं देवाणुप्पिया। धण्णे सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणिया सुण्हा, जीए णं पंच सालिअक्खए सगडसागडिएणं निज्जाइए।'

अथवा

तया सो इंददत्तो वि सपुत्तो तत्थ समागओ। तं गणेसपडिमं दट्ठूणं पुत्तं कहेइ— "हे पुत्त ! एसच्चिय सिप्पकला कहिज्जइ। केरिसी पडिमा निम्मविआ, इमाए निम्मावगो खलु धण्णयमो सलाहणिज्जो य अत्थि। पासेसु, कत्थ वि भुल्लं खुण्णं च अत्थि ? जइ तुमं एआरिसी पडिमं निम्मवेज्ज, तया ते सिप्पकलं पसंसेमि, नन्नहा।"